

डॉ. गैरी मीडर्स, ईश्वर की इच्छा को जानना, सत्र 5, नए नियम में ईश्वर की इच्छा

© 2024 गैरी मीडर्स और टेड हिल्डेब्रांट

मुझे यहाँ पर काम करने के लिए माफ़ करें; मैं फ्लोरिडा में अपने छोटे से रिटायरमेंट ऑफिस में ये व्याख्यान रिकॉर्ड कर रहा हूँ, और इसलिए, आप कैमरे की परिधि पर होने वाली गंदगी को नहीं देखना चाहते; आप सिर्फ़ स्क्रीन देखना चाहते हैं और बात करने वाले व्यक्ति की बात सुनना चाहते हैं। ठीक है, अब हम पाँचवें व्याख्यान पर आ रहे हैं, जो कि नए नियम में ईश्वर की इच्छा है। ये GM5 स्लाइड और नोट्स हैं। GM5, सुनिश्चित करें कि आपके पास ये आपके सामने हों ताकि हम जो करें वो आपके लिए ज़्यादा फ़ायदेमंद हो।

याद रखें कि सीखना सिर्फ़ सुनना नहीं है; सीखने के लिए ज़रूरी है कि हम जो कर रहे हैं उसमें हम शामिल हों। माफ़ करें, मुझे भी अपनी आँखों में परेशानी हो रही है। मेरे पास लगभग पाँच चश्मे हैं, और उनमें से कोई भी काम नहीं करता। इसलिए आपका धैर्य निश्चित रूप से सराहनीय है।

ठीक है, तो आप अपनी टिप्पणियों की तालिका का अनुसरण कर रहे हैं, और यहाँ हम परमेश्वर की इच्छा जानने और नए नियम को पढ़ने के तरीके के बारे में बात कर रहे हैं। पुराने नियम में हमने जो किया, उससे हमें एक बढ़िया आधार मिला है, और मैं आपको बस यह याद दिलाना चाहता हूँ कि बाइबल बाइबल है; यह पुराना नियम और नया नियम नहीं है; यह बाइबल है। और यह कि नया नियम पुराने नियम में अपनी नींव के रूप में जो रखा गया है, उस पर बहुत निर्भर है।

निश्चित रूप से, समय और संदर्भ में अंतर होने के कारण मतभेद हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि पुराने नियम को कभी भी खारिज न करें। इसे हम प्रस्तावना कहते हैं, और यह वही है जो पहले आता है। और जब हम इसे जानेंगे, तो हम नए नियम को बेहतर तरीके से जान पाएंगे।

ठीक है, तो व्याख्यान संख्या पांच, जीएम5, अब मेरे साथ चलें यदि आप चाहें तो। ठीक है, परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए नए नियम के पैटर्न। नए नियम में, हमारे पास परमेश्वर की इच्छा की भाषा है, वह भाषा जिसका उपयोग चर्च में लोग परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए करते हैं, इत्यादि।

यह सब कुछ नए नियम से लिया गया है। पुराने नियम में अलग शब्दावली का इस्तेमाल किया गया है, हालाँकि यह वही बात कह रहा है। परमेश्वर को प्रसन्न करना परमेश्वर की इच्छा पूरी करना है।

और इसलिए हम पहले ही इस बारे में काफी कुछ जान चुके हैं। ईश्वर की इच्छा की श्रेणियाँ, इसलिए हमारे पास भाषा है, हमारे पास श्रेणियाँ हैं, और हमारे पास ईश्वर की इच्छा की खोज है जिसके बारे में हम बात करेंगे। ठीक है, ईश्वर की इच्छा की भाषा।

मेरी स्लाइड्स की तरह, वे भी इधर-उधर घूमते रहते हैं। परमेश्वर की इच्छा के बारे में रूढ़िवादी भाषा ज़्यादातर न्यू टेस्टामेंट से है। मैं रूढ़िवादी भाषा कहता हूँ।

हमारे पास अभी कोई नया विचार नहीं है। हम कुछ अलग दृष्टिकोणों के साथ उन विचारों को निखारने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन भाषा ही, ईश्वर की इच्छा, नए नियम के अनुवादों में प्रमुख है। नए नियम में 51 ग्रंथ हैं जिनमें इच्छा शब्द और एक दिव्य संदर्भ है, ईश्वर की इच्छा, प्रभु की इच्छा, ईश्वर की इच्छा, इस तरह की चीजें।

आप GM5 सप्लीमेंट देख सकते हैं, जिसे मैं बाद में देखूंगा। और मेरी किताब में भी एक अध्याय है, बेशक, अगर आपके पास यह है और आप इसे पढ़ना चाहते हैं। जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, मैं एक नया संस्करण लिखने जा रहा हूँ।

इसमें वही विचार और वही सामग्री होगी, लेकिन मुझे लगता है कि इसे बेहतर क्रम में रखा जाना चाहिए और इसे कई तरीकों से विस्तारित किया जाना चाहिए। इसके अलावा, परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए नए नियम के पैटर्न। परमेश्वर की इच्छा की ये श्रेणियाँ।

परमेश्वर की इच्छा कई तरह से परमेश्वर की संप्रभुता की मान्यता है। यदि आप नए नियम में पत्रों के अभिवादन के बारे में सोचते हैं, तो परमेश्वर की इच्छा से, मैं एक प्रेरित हूँ। मैं परमेश्वर की इच्छा से आपको लिखता हूँ।

दूसरे शब्दों में, ये ऐसे कथन हैं जो मुक्तिदायी इतिहास के प्रवाह को हमारे प्रभु के हाथ में रखते हैं। हमारा प्रभु परमेश्वर है, और वह प्रभुतापूर्वक कार्य करता है। और इसलिए, अभिवादन बिल्कुल उसी तरह है।

प्रेरितों के काम अध्याय 21 को देखें; हम यहाँ कुछ आयतों को देखेंगे, समय की पाबंदी के भीतर, और यह भी देखें। मैं चाहता हूँ कि आप उन्हें पढ़ें। वास्तव में, यदि आपने व्याख्यान शुरू करने से पहले ये बातें पढ़ ली होतीं, तो यह अच्छा होता।

लेकिन फिर भी, कृपया साथ चलें। 21:14 . अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो मेरी आँखों पर ध्यान केंद्रित करवाएँ।

बाइबल छोटे अक्षरों में लिखी जाती है, है न? यह यहाँ है। मैं संदर्भ नहीं पढ़ रहा हूँ, बल्कि मैं सिर्फ अंश पढ़ रहा हूँ। और चूँकि वह राजी नहीं हुआ, इसलिए हमने बात रोक दी और कहा, प्रभु की इच्छा पूरी हो।

यह वह संदर्भ है जिसमें पौलुस यरूशलेम जा रहा था। और एल्डर ने कहा, नहीं, तुम ऐसा नहीं कर सकते। वे तुम्हें मार डालेंगे।

वह कहता है कि मुझे यह करना ही होगा। यह मेरा काम है। मुझे यही करने के लिए बुलाया गया है।

और अंत में, जब वे उसे मना नहीं पाए, तो उन्होंने कहा, प्रभु की इच्छा पूरी हो। यह त्यागपत्र नहीं है। यह ईश्वर की संप्रभुता की मान्यता है।

वे इस घटना को स्वीकार कर रहे हैं, जबकि वे इससे असहमत हैं। और यह दिलचस्प है। वे इससे असहमत हैं क्योंकि उन्हें प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन हुआ था कि जब पॉल वहाँ पहुँचेगा तो उसे बाँध दिया जाएगा।

और इसलिए, वे पॉल से उस जानकारी के बारे में बात कर रहे थे जो उन्हें एक भविष्यवक्ता से मिली थी। पॉल ने कहा कि मुझे खेद है क्योंकि भविष्यवक्ता ने कहा है कि मुझे बाँध दिया जाएगा। यह मुझे रोकने वाला नहीं है।

मेरे मूल्य हैं कि मुझे वहाँ जाना है और यरूशलेम में सुसमाचार का प्रचार करने के लिए परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना है। और इसलिए, परिणामस्वरूप, उन्होंने कहा, प्रभु की इच्छा पूरी हो। त्यागपत्र नहीं बल्कि परमेश्वर की संप्रभुता को स्वीकार करना।

रोमियों 1:10 यदि आप रोमियों 1:10, पद 8 को पढ़ते हैं, तो मैं आप सभी के लिए यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, क्योंकि आपका विश्वास सारे

जगत में घोषित किया गया है। क्योंकि परमेश्वर मेरा गवाह है, जिसकी सेवा मैं अपनी आत्मा से उसके पुत्र के सुसमाचार में करता हूँ, कि मैं बिना रुके, अपनी प्रार्थनाओं में हमेशा तुम्हारा उल्लेख करता हूँ, और माँगता हूँ कि किसी तरह, परमेश्वर की इच्छा से, मैं अब आखिरकार सफल हो सकता हूँ और तुम्हारे पास आ सकता हूँ। परमेश्वर की इच्छा से परमेश्वर की संप्रभुता के प्रति पौलुस की अधीनता का एक कथन है।

पॉल की इच्छा है कि वह जाए, लेकिन समय सही नहीं है। इसलिए, वह नहीं जा सकता। वह अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं को पूरा नहीं कर सकता।

और वह प्रार्थना कर रहा है कि परमेश्वर की योजना में, परमेश्वर की संप्रभु इच्छा में, वह अंततः वहाँ पहुँच जाएगा। तो, 1 पतरस 3:17 में, नए नियम के अंत में, 1 पतरस 3.17, पद 15 में संप्रभुता है। लेकिन अपने दिलों में, मसीह प्रभु को पवित्र मानो, और जो कोई तुमसे तुम्हारी आशा के बारे में पूछे, उसे उत्तर देने के लिए हमेशा तैयार रहो।

परन्तु नम्रता और भय के साथ, और विवेक शुद्ध रखकर ऐसा करो; इसलिये कि जब तुम्हारी निन्दा की जाए, तो जो लोग मसीह के साम्हने तुम्हारे अच्छे चालचलन की निन्दा करते हैं, वे लज्जित हों। पद 17. क्योंकि यदि परमेश्वर की यही इच्छा हो, तो भलाई करने के कारण दुख उठाना बुराई करने से उत्तम है।

दुख सहना ईश्वर की इच्छा है। यह उसकी सर्वोच्च इच्छा है। हम इसे नहीं चुनते।

यह अनैतिक होने और सज़ा पाने का मामला नहीं है, लेकिन हम एक दुष्ट दुनिया में रहते हैं जो परमेश्वर से नफरत करती है। और प्रेरितों को इसका बहुत अनुभव था। अगर परमेश्वर की इच्छा से, दुख आपके भाग्य में है, तो इसे स्वीकार करें और उस संदर्भ में जितना संभव हो उतना अच्छा जीवन जिएँ।

यह एक अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यान है। यह कई भाषाओं में होगा। आपमें से कुछ लोग ऐसे देशों में होंगे जहाँ आपको बंद दरवाजों के पीछे सुनना पड़ता है।

और अगर लोगों को पता चल जाए कि आप सार्वजनिक तौर पर ईसाई हैं और ऐसा कर रहे हैं तो आपको सताया जा सकता है। इसलिए, आप एक अमेरिकी नागरिक से बेहतर जानते हैं कि पीटर यहाँ जो कह रहे हैं उसका क्या मतलब है। और इसलिए, परमेश्वर की संप्रभुता, बाइबल इससे भरी हुई है।

पुराना नियम है। मैंने आपको पुराने नियम की आयतें दीं, लेकिन मैंने उन्हें आपको पढ़कर नहीं सुनाया। और उस संप्रभुता का संबंध परमेश्वर द्वारा उसकी ओर से उसकी योजना के अनुसार कार्य करने से है।

यह हमारे लिए कुछ नहीं है। कभी-कभी, हम इसे जानते हैं। हम आमतौर पर इसे घटना के बाद ही जानते हैं, निश्चित रूप से घटना से पहले नहीं।

और हमें इसका पता लगाने की कोशिश नहीं करनी है। दूसरे शब्दों में, आप यह नहीं कहते कि हे प्रभु, मैं प्रार्थना कर रहा हूँ कि आप मुझे बताएँ कि जब मैं ऐसी-ऐसी जगह पर पहुँचूँगा तो आपकी संप्रभुता मेरे साथ क्या करने जा रही है। नहीं, ऐसा कोई मॉडल नहीं है।

सच तो यह है कि जैसे-जैसे यह आता है, हमें इसका ज्ञान उसके बाद ही होता है। लेकिन परमेश्वर, जिस पर हम भरोसा कर सकते हैं, कार्य को संचालित करता है। अब, इस बारे में चर्चा करने के लिए बहुत सी बातें हैं कि परमेश्वर किस तरह से कार्य पर प्रभुतापूर्वक शासन करता है।

बाइबल बयान तो करती है, लेकिन वह हमें उस प्रक्रिया के बारे में नहीं बताती। हमें पहले से कुछ नहीं बताती। वह बस हमें तैयार रहने के लिए कहती है।

परमेश्वर सर्वोच्च है, और हमें उस सर्वोच्चता के प्रति समर्पित होना चाहिए। यह परमेश्वर की इच्छा के संबंध में परमेश्वर की सर्वोच्चता की एक श्रेणी, एक प्रमुख श्रेणी है। अब, परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए नए नियम के नमूने।

एक और पैटर्न है, एक और श्रेणी है। दूसरी श्रेणी ईश्वर की इच्छा है, जो ईश्वर की नैतिक घोषणाओं के अनुरूप होने का आह्वान है। यह हमारा क्षेत्र है।

व्यवस्थाविवरण कहता है कि गुप्त बातें प्रभु की हैं, लेकिन जो बातें प्रकट की गई हैं वे हमारी हैं। और बाइबल में परमेश्वर ने हमें जो नैतिक शर्तें दी हैं, वे हमारी संपत्ति हैं जिनका हमें पालन करना चाहिए, क्योंकि यह हमारे संदर्भ और समय और स्थान के अनुसार काम करती हैं। इसलिए, परमेश्वर की इच्छा परमेश्वर की नैतिक घोषणाओं के अनुरूप होने का आह्वान है।

रोमियों के अध्याय 2 को देखें। रोमियों के अध्याय 2, आयत 17 और 18। यह एक विशेष रूप से महत्वपूर्ण अध्याय है क्योंकि इसमें ऐसे मुद्दों को संबोधित किया गया

है जो कई तरीकों से सामने आएंगे। लेकिन रोमियों के अध्याय 2, आयत 17 और 18।

लेकिन अगर आप खुद को यहूदी कहते हैं। अब, यह अंश है, रोमियों के आरंभिक भाग में, पौलुस गैर-यहूदियों को संबोधित कर रहा था, और वह यहूदियों को संबोधित कर रहा है। दुनिया में परमेश्वर के काम की बड़ी तस्वीर के संबंध में।

और वह अभी यहूदी समूह से बात कर रहा है। लेकिन अगर आप खुद को यहूदी कहते हैं और कानून पर भरोसा करते हैं और ईश्वर पर गर्व करते हैं, तो इसका मतलब है कि आप गर्व करते हैं क्योंकि आपके पास कानून है। और आप उसकी इच्छा जानते हैं।

उसकी इच्छा क्या है? यह कानून है। यह वही है जो वे टोरा, कानून और नबियों से जानते हैं। वे उस ज्ञान का घमंड करते हैं।

वे उसकी इच्छा जानते हैं और जो उत्तम है उसे स्वीकार करते हैं क्योंकि उन्हें कानून द्वारा निर्देश दिया गया है। और इसलिए, नैतिक घोषणा की यह श्रेणी क्या है? पुराने नियम में परमेश्वर का कानून नैतिक घोषणा है। अब, कानून के तकनीकी कोड बहुत कम हैं।

पूरे बाइबल में उस भाग पर केवल कुछ अध्याय हैं। लेकिन परमेश्वर की व्यवस्था और गवाही के प्रति शिक्षा, मूसा और भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से परमेश्वर की शिक्षा की गवाही, ऐसी चीज़ है जिसका पालन किया जाना चाहिए और जिसे पहचाना जाना चाहिए। और यह एक नैतिक शिक्षा है क्योंकि उन्हें इसमें शामिल होना था।

आप उसकी इच्छा जानते हैं। इसलिए, उसकी इच्छा ही उसकी शिक्षा है। 1 थिस्सलुनीकियों अध्याय चार और पद तीन। 1 थिस्सलुनीकियों 4:3। यहाँ थोड़ा आगे। आप जानते हैं, जब मैं बाइबल में इस तरह से पलटना शुरू करता हूँ, तो मैं बहुत ज़्यादा इस्तेमाल नहीं करता। मैं बहुत सारी अलग-अलग बाइबलों का इस्तेमाल करता हूँ।

मैं देख सकता हूँ कि नए नियम की पुस्तकें वास्तव में कितनी पतली हैं। आप बहुत जल्दी से इसे छोड़ सकते हैं। पहला थिस्सलुनीकियों 4.3। ठीक है, चलो बस सामग्री को थोड़ा सा देखते हैं।

तो फिर भाईयों, हम आपसे प्रभु यीशु में विनती करते हैं और आग्रह करते हैं कि जैसे आप हमसे सीखते हैं वैसे ही आपको भी जीना चाहिए। यही नैतिकता है। यही शिक्षा है।

और परमेश्वर को प्रसन्न करना। पुराने नियम की भाषा है। मूल रूप से, आप कह सकते हैं कि परमेश्वर की इच्छा पूरी करनी थी।

जैसा आप कर रहे हैं, वैसा ही और अधिक करते रहें।

दूसरे शब्दों में, पॉल उन्हें प्रोत्साहित नहीं कर रहा है। अरे, वहाँ जाओ और पता लगाओ कि तुम्हें क्या करना चाहिए। नहीं, मेरी बात सुनो और वही करो जो मैं तुम्हें बताता हूँ।

वह दूसरी आयत में आगे कहते हैं। क्योंकि तुम जानते हो कि हमने तुम्हें प्रभु यीशु के द्वारा क्या निर्देश दिए थे। वह प्रभु यीशु के माध्यम से था।

क्योंकि जब पौलुस ने ऐसा किया तो प्रभु यीशु वहाँ से चले गए थे। लेकिन वह वही सिखा रहा था जो मसीह ने सिखाया था और जो परमेश्वर ने उसे बताया था। क्योंकि परमेश्वर की यही इच्छा है।

परमेश्वर की इच्छा क्या है? निर्देश है। और परमेश्वर की इच्छा है आपका पवित्रीकरण। पवित्रीकरण क्या है? पवित्रीकरण आपकी समझ में वृद्धि है।

दूसरे शब्दों में कहें तो पवित्रीकरण एक परिवर्तित मन का विकास है। ताकि आपका विश्वदृष्टिकोण और मूल्य शास्त्रों की शिक्षाओं के अनुरूप हों, यही मूल रूप से सबसे महत्वपूर्ण है।

पवित्रीकरण क्या है? यह एक रूपांतरित प्रक्रिया है जिससे आप दूर रहते हैं। और फिर यह कई सारी चीजें देता है।

तो, यहाँ परमेश्वर की इच्छा सीधे तौर पर बताई गई है। यह परमेश्वर की नैतिक इच्छा है, जो कि वह प्रमुख हिस्सा है जिसे हमें निपटाने के लिए दिया गया है। संप्रभुता परमेश्वर का काम है।

हम इसे घटना के बाद देखते हैं। हम इसमें आनन्दित हो सकते हैं, या हम बुराई के परिणामों के साथ जी सकते हैं जो हमें प्रभावित कर रहे हैं क्योंकि परमेश्वर ने, किसी भी कारण से, हमें बचाने का फैसला नहीं किया। बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना का सिर काट दिया गया था।

यीशु कुछ ही मील दूर था। यीशु ने उसे नहीं बचाया। जॉन के लिए, यह एक नकारात्मक भविष्यवाणी थी, अगर आप चाहें तो।

और वह उस जेल में उस बदनाम राजा के हाथों मर गया जिसने उसे इसलिए मार डाला क्योंकि यूहन्ना ने नैतिक सत्य सिखाया था जो राजा को पसंद नहीं था। ठीक है, अब 1 पतरस 2:15। तो एक पल के लिए 1 पतरस पर वापस आते हैं।

वे इब्रानियों के पीछे हैं। और वैसे, मैं बस, अगर आप चाहें, तो मैं इस वाक्यांश का उपयोग पाठ को चुनने के लिए करूँगा। मैं आपको बस कुछ पाठ दे रहा हूँ।

बाइबल इस शिक्षा से भरी पड़ी है। मैं आपको उदाहरण दे रहा हूँ। 1 पतरस अध्याय 2 और पद 15, पद 13।

प्रभु के लिए हर मानवीय संस्था के अधीन रहो, चाहे वह सर्वोच्च सम्राट के अधीन हो या राज्यपालों के अधीन हो, जिन्हें बुरे काम करने वालों को दण्डित करने और अच्छे काम करने वालों की प्रशंसा करने के लिए उसके द्वारा भेजा गया हो। वैसे, उनके लिए यह सुनना आसान नहीं था। वे साम्राज्य से उत्पीड़न के बीच में थे।

जब पीटर ने ऐसा कहा, तो मुझे लगता है कि कुछ लोग इधर-उधर देख रहे थे और अपना सिर हिला रहे थे। इसके लिए, यह आपके समाज में समाज के अनुरूप रहना है, नैतिक सत्य का उल्लंघन नहीं करना है, आपकी दुनिया, आपके मूल्यों का उल्लंघन नहीं करना है। लेकिन हमारे समाज में ऐसी कई चीजें हैं, जिनके साथ हम सहयोग कर सकते हैं, अगर हमें पसंद नहीं है।

मुद्दा पसंद करना नहीं है। मुद्दा परमेश्वर के वचन से सहमति का है। ऐसी बहुत सी चीजें हैं जो परमेश्वर के वचन से संबंधित नहीं हैं।

आप कहाँ पार्क करते हैं? आपका घर किस तरह का है? आपके पास एक चर्च है। बाथरूम कहाँ हैं? वे कितने बड़े हैं? नियम और कानून। मैंने चर्चों को कोड को लेकर शहरों के साथ लड़ाई लड़ते देखा है क्योंकि उन्हें यह पसंद नहीं था।

खैर, जब आप ऐसा करते हैं तो आप परमेश्वर की अवज्ञा कर रहे होते हैं। श्लोक 15. इसके लिए, आपको अपने समाज के अनुरूप होना चाहिए जब वह परमेश्वर का उल्लंघन न करता हो।

और आप सिर्फ़ इसलिए ऐसा दावा नहीं कर सकते क्योंकि आप ऐसा करना चाहते हैं। क्योंकि यह ईश्वर की इच्छा है कि अच्छे काम करके आप मूर्ख लोगों की अज्ञानता को शांत कर दें। यह दिलचस्प है, है न? दुनिया ईसाइयों से उम्मीद करती है कि जब इस तरह की चीज़ों की बात आती है तो वे बहुत शोर मचाएँ।

खैर, कभी-कभी आप सोए हुए भालू को जगा सकते हैं। धर्मग्रंथ आपको बताते हैं कि जिस हद तक आप नैतिक रूप से और ईसाई विश्वदृष्टि और मूल्य प्रणाली के भीतर अपनी संस्कृति की ज़रूरतों को पूरा करने में सक्षम हैं, जैसे कि बिल्डिंग कोड और इन सभी तरह की चीज़ों में, आपको ऐसा करना चाहिए। कई लोगों के लिए इसे बदलना आसान नहीं है।

तो, भगवान की नैतिक घोषणाएँ। एक अच्छा इंसान होना भगवान की इच्छा को पूरा करना है। एक अच्छा इंसान, जैसा कि शास्त्रों में वर्णित है, और कभी-कभी एक अच्छा नागरिक भी होना चाहिए, जब तक कि यह शास्त्रों की शिक्षाओं के विपरीत न हो।

इन श्रेणियों में तीसरी बात यह है। ईश्वर की इच्छा वाक्यांश कभी भी विश्वासी को ईश्वर की इच्छा खोजने के लिए प्रोत्साहित नहीं करते हैं। ईश्वर की इच्छा डेटाबेस हमें ईश्वर की इच्छा करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

मैं फिर से कहना चाहता हूँ। आप ईश्वर की इच्छा को जानने के लिए शास्त्रों को पढ़ने के अलावा कुछ नहीं कर रहे हैं। हम इसे ईश्वर की इच्छा को पाना कह सकते हैं, लेकिन अभी हम इस बारे में बात नहीं कर रहे हैं।

हम किसी ऐसी चीज़ के बारे में बात कर रहे हैं जो अलग और ऊपर है। आप कहते हैं, भगवान, मुझे बताओ कि मुझे क्या करना है। एक मिनट रुको।

उसने पहले ही ऐसा कर लिया है। इसे पूरा करो। इसलिए, परमेश्वर की इच्छा वाक्यांश कभी भी विश्वासी को परमेश्वर की इच्छा को खोजने के लिए नहीं बल्कि उसे करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

जैसा कि एक लेखक ने कहा, ईश्वर की इच्छा खोई हुई नहीं है। आपको इसे खोजने की ज़रूरत नहीं है। यह शास्त्रों में है।

आपको इसे खोजना होगा और बाहर निकालना होगा और इससे निपटना होगा। भगवान ने हमारे लिए यही योजना बनाई है। और इसलिए, यह खोजने का मामला नहीं है।

पुराने नियम के विद्वान वाल्टके की एक किताब है। उसका शीर्षक है ईश्वर की इच्छा को जानना। और फिर उसका उपशीर्षक है, बुतपरस्त धारणा? यार, यह तो वाकई आपके चेहरे पर है, है न? मुझे पता है, मुझे खेद है।

यह जानना नहीं है, बल्कि खोजना है। ईश्वर की इच्छा को खोजना। यही पुस्तक का शीर्षक है।

मैं इसे यहाँ पीछे छोड़ आया हूँ। ईश्वर की इच्छा का पता लगाना, उप-चरण, एक बुतपरस्त धारणा? सच कहूँ तो, उत्तम दर्जे का। ईश्वर की इच्छा का पता लगाना, उस परिवर्तित मन, विश्वदृष्टि और मूल्य प्रणाली पर काम करने के अलावा, एक भविष्यवाणी करने जैसा काम है जिसकी शास्त्रों द्वारा निंदा की जाती है।

अब, यह आपके लिए सोचने वाली एक बड़ी बात है क्योंकि मैं शायद इस प्रक्रिया के बारे में आपके बहुत से स्टीरियोटाइप को तोड़ रहा हूँ। मुद्दा यह है कि आप कोठरी में जाकर यह न कहें कि, भगवान, मुझे बताओ कि मुझे क्या करना है। यदि आप कोठरी में जाते हैं, प्रकाश चालू करते हैं और पाठ पढ़ते हैं, पाठ का अध्ययन करते हैं, समानांतर आज्ञाओं की खोज करते हैं, जीवन में आपकी स्थिति के समानांतर कथाएँ खोजते हैं, और आप वहाँ पाएँगे कि भगवान आपसे क्या करवाना चाहते हैं।

ठीक है, तो जब बाइबल आपको कुछ करने के लिए कहती है, तो आप कुछ जानते हैं। पॉल ये पत्र लिखते हैं, और वे छोटे होते हैं, और वह श्रोताओं को लिखते हैं, आमतौर पर जिन्हें वह जानते हैं। और हम इन्हें पत्र कहते हैं; हम उन्हें पत्र कहते हैं; वे पत्र हैं। और वे वही हैं जिन्हें हम साहित्यिक शैली में पत्र कहते हैं; वे सामयिक हैं।

पॉल उन अवसरों के बारे में लिख रहा है जिनके बारे में वह जानता था, जिनके बारे में श्रोता जानते थे। और इसलिए, वह उन्हें लिखता है, और वह उनसे अपेक्षा करता है कि वे जो कह रहे हैं उसे समझें क्योंकि उनके पास इसे समझने के लिए संदर्भ है। लेकिन जब हम किसी पत्री पर आते हैं, तो हम मूल श्रोता नहीं होते।

बाइबल हमारे लिए है, लेकिन यह हमारे लिए नहीं है। हमें उन पाठकों को समझना होगा जिनके लिए इसे लिखा गया था ताकि हम समझ सकें कि पौलुस उन्हें लिखते समय क्या कहना चाहता है। यह सतही नहीं है।

अब, बहुत सारे सामान्य नैतिक सत्य हैं, लेकिन शास्त्र को वास्तव में समझने के लिए हमें मूल संदर्भ की जांच करनी होगी, अपने समय और स्थान पर इसका क्या अर्थ था, और फिर इसे हमारे संदर्भ में समान स्थितियों के लिए उचित रूप से संदर्भित करना होगा। यह बहुत लंबा है। शास्त्र का संदर्भीकरण नामक एक संपूर्ण अनुशासन है।

प्रवेश के लिए विभिन्न देशों में इसका बहुत अधिक उपयोग किया जाता है। आप बाइबल को दूसरे समय और स्थान, दूसरी संस्कृति के संदर्भ में कैसे प्रस्तुत करते हैं? ऐसा करने के लिए आपको बाइबल को वास्तव में अच्छी तरह से जानना होगा क्योंकि आपको उन कनेक्शन लाइनों को बनाना होगा, उन कनेक्शन लाइनों को। और इसलिए जब पॉल एक आदेश देता है जहाँ वह कहता है, मैं चाहता हूँ कि तुम जो जानते हो उसे शामिल करो, ठीक है, उनके पास पहले से ही वह जानकारी है।

उसे इसे दोहराने की ज़रूरत नहीं थी। इसलिए, जब हम पत्र पढ़ते हैं, तो हमें बहुत सी चीज़ें मिलती हैं जिन्हें पंक्तियों के बीच में दिखाना होता है। और यह पत्र साहित्य की व्याख्या करने की चुनौती का हिस्सा है।

तो, यह कुछ करने का आदेश है। प्रभु की सेवा करो। इसका क्या मतलब है? खैर, मैंने आपको बताया कि इसका क्या मतलब है।

इस पर विचार करें। मुझे इसे फिर से लिखने की ज़रूरत नहीं है। किसी कार्य को करने का आदेश देने के लिए ज्ञान का एक ऐसा भंडार होना चाहिए जो मार्गदर्शन प्रदान करे।

इसलिए, जब आप धर्मग्रंथ पढ़ते हैं, तो सावधान रहें। यह कोई ऐसा उपन्यास नहीं है जो सर्वव्यापी संदर्भ वाला हो। इसका एक संदर्भ था।

पॉल ने उस संदर्भ में बात की और हमें अध्ययन करना होगा कि हमारे संदर्भ में इसका क्या अर्थ है, जो कि समान नहीं है। बाइबल आपके लिए लिखी गई है, लेकिन यह आपके लिए नहीं लिखी गई थी। और आपको यह समझना होगा कि यह मूल

रूप से किसके लिए लिखी गई थी, इससे पहले कि आप प्रूफ़ टेक्स्ट का उपयोग करना शुरू करें, जैसा कि हम इसे कहते हैं।

बाइबल के शब्दों को लें और उन्हें अपनी परिस्थिति के अनुसार ढालें। इसके अलावा, परमेश्वर की इच्छा जानना निर्णय लेने के लिए अप्रकाशित जानकारी की खोज नहीं है। और कई बार लोग परमेश्वर की इच्छा को ऐसे समझते हैं जैसे कि मुझे उसे खोजना है।

मुझे लगता है कि भगवान को मुझे बताना होगा कि मुझे किससे शादी करनी चाहिए? मुझे किस स्कूल में जाना चाहिए? क्या मुझे सेना में जाना चाहिए? हाँ, तुम्हें जाना चाहिए। क्या मुझे यह करना चाहिए? क्या मुझे वह करना चाहिए? लेकिन सच्चाई यह है कि भगवान की इच्छा जानना किसी अज्ञात जानकारी की खोज नहीं है। यह जीवन में आपके सामने आने वाली परिस्थितियों में अपने विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों के साथ परिवर्तित मन को लागू करने की खोज है।

सच कहूँ तो यह एक बहुत बड़ी चुनौती है। अब, पादरी और जो लोग औपचारिक रूप से धर्मग्रंथों का अध्ययन करते हैं, वे इसे बेहतर तरीके से कर सकते हैं। लेकिन सच तो यह है कि मुझे परवाह नहीं है कि आप कौन हैं।

मुझे परवाह नहीं कि आप क्या काम करते हैं। एक ईसाई के रूप में आपके पास एक महान कार्य है, चाहे आप एक व्यवसायी हों, एक डॉक्टर, एक वकील, एक दंत चिकित्सक, एक चौकीदार, एक बस चालक, आप सभी एक समान स्तर पर हैं। आप एक समान स्तर पर हैं।

आप अप्रकाशित जानकारी की खोज नहीं करते। आपको अपने पास मौजूद जानकारी का इस्तेमाल करना होगा। आप जानते हैं, मैंने कई चर्चों में जीवन में एक बात देखी है।

जब कोई व्यक्ति उच्च-स्तरीय पेशेवर होता है, जैसे डॉक्टर, वकील, कोई ऐसा व्यक्ति जिसे बाकी संस्कृति सम्मान की दृष्टि से देखती है और मदद के लिए जाती है, जब वे ईसाई होते हैं, तो उन्हें अक्सर शिक्षण पदों पर रखा जाता है क्योंकि वे आधिकारिक लोग होते हैं। और मैंने इसे बार-बार देखा है। वे चिकित्सा के बारे में जानते हैं।

वे कानून जानते हैं। वे यह जानते हैं। वे वह जानते हैं।

लेकिन उन्हें बाइबल के बारे में कुछ भी नहीं पता। वे सिर्फ आपको बताते हैं कि उनके लिए इसका क्या मतलब है। और मुझे वाकई इसकी परवाह नहीं है कि उनके लिए इसका क्या मतलब है।

मुझे इसकी परवाह है कि इसका क्या मतलब है, इसका क्या मतलब है ताकि हम यह निर्धारित कर सकें कि इसका हमारे लिए क्या मतलब है।

यह एक बहुत बड़ा क्षेत्र है जिसका सामना बाइबल के हर व्याख्याकार को करना पड़ता है। हो सकता है कि आप इस बारे में ज़्यादा कुछ करने की स्थिति में न हों। चर्च में जाने वाले कई ईसाइयों के लिए, आप ऐसी स्थिति में भी हो सकते हैं जहाँ आप सार्वजनिक रूप से ऐसा नहीं कर सकते।

अपने संसार के साथ पवित्रशास्त्र को जोड़ने की चुनौती है। और हाँ, आपको इस बारे में बहुत सावधान रहना होगा कि आप ऐसा कैसे करते हैं। और हम सभी को मदद की ज़रूरत है।

मैं यह काम इतने सालों से कर रहा हूँ कि मैं गिन भी नहीं सकता, दशकों और दशकों से। और जब भी कोई पाठ तैयार करने या उपदेश देने की बात आती है तो मुझे अभी भी कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। तो इन श्रेणियों के संदर्भ में यह ईश्वर की इच्छा का मुद्दा है।

ईश्वर की इच्छा वाक्यांश कभी भी किसी विश्वासी को इसे खोजने के लिए नहीं बल्कि इसे करने के लिए प्रोत्साहित करता है। अब, ईश्वर की इच्छा जानने के लिए पैटर्न। जानने के लिए प्रोत्साहन हैं।

यह चौथी श्रेणी है। परमेश्वर की इच्छा के ज्ञान से परिपूर्ण होना। हमारा निमंत्रण है कि पहले से मौजूद जानकारी से जुड़ें, न कि नए रहस्योद्घाटन की तलाश करें।

अब यह एक कठिन सवाल है। और मुझे आपके साथ इस वीडियो से ज़्यादा कुछ करने में सक्षम होना होगा। लेकिन मैं आपको कुलुस्सियों से एक उदाहरण देना चाहता हूँ।

कुलुस्सियों के अध्याय एक की नौवीं आयत। बाइबल का दुरुपयोग इसलिए होता है क्योंकि लोग इसका उचित तरीके से अध्ययन नहीं करते। वे इसे इस तरह से पढ़ते हैं मानो यह खुद ही अपनी व्याख्या कर रही हो।

बाइबल में स्पष्ट नैतिक आदेश दिए गए हैं, जिन्हें आप तुरंत जान जाते हैं कि आपको कई सद्गुणों और दोषों की सूचियों में ऐसा नहीं करना चाहिए। लेकिन कुलुस्सियों के अध्याय एक में कुछ ऐसी भाषा है जिसका मैंने बहुत दुरुपयोग होते देखा है। लेकिन मैं इसे आपके लिए पढ़ना चाहता हूँ और आपको कुछ संकेत देना चाहता हूँ।

और इसलिए, याद रखें, यह कुलुस्सियों के लिए लिखा गया सामयिक साहित्य है। कुलुस्सियों को उनकी संस्कृति द्वारा मसीह से भटकने, प्रेरितिक शिक्षा से भटकने के लिए उकसाया जा रहा है। और पौलुस उनकी मदद करने की कोशिश करने के लिए आ रहा है।

यह एक संकट है। वह कहते हैं, और इसलिए जिस दिन से हमने सुना है, हमने आपके लिए प्रार्थना करना बंद नहीं किया है, यह माँगते हुए कि आप सभी आध्यात्मिक ज्ञान और समझ में उनकी इच्छा के ज्ञान से भर जाएँ। अब, लोग उस अंश पर आएँगे और वे कहेंगे, ओह, मुझे भगवान से यह माँगना है कि वह मुझे समझ से भर दे।

अच्छा, एक मिनट रुकिए। शब्द 'भरना' का क्या अर्थ है? भरना एक रूपक है। आत्मा से भर जाओ।

इसका क्या मतलब है? क्या इसका मतलब है कि आप अपने कपाल को खोलकर नया डेटा कार्ड प्राप्त कर रहे हैं? क्या इसका मतलब है कि आप अपनी छाती की गुहा को खोलकर ऐसी जानकारी ले रहे हैं जिसे आप कंप्यूटर की तरह बाहर निकाल सकते हैं? भरे जाने का क्या मतलब है? यह एक रूपक है। बाइबल में प्रेरितों के काम में कहा गया है कि डोरकास अच्छे कामों से भरी हुई थी। डोरकास के लिए इसका क्या मतलब है? क्या इसका मतलब है कि वह जॉन की किताब में यीशु के सामने आई मार्था थी? कि वह कई कामों में व्यस्त थी? नहीं, रूपक के रूप में भरने को किसी चीज़ के और अधिक पाने के अर्थ में नहीं समझा जाना चाहिए।

भरने को विशेषता के अर्थ में समझा जाना चाहिए। कृपया इस बात पर ध्यान दें कि जानकारी द्वारा विशेषता होना। पॉल ने उन्हें सिखाया था।

दरअसल, इस विशेष मामले में पॉल के शिष्य इपफ्रास ने उन्हें सिखाया था और पॉल की जानकारी दी थी। अब पॉल इसके लिए आह्वान कर रहा है। याद रखें, एक पत्र को दोहराया जाना जरूरी नहीं है।

एक पत्र उन चीज़ों को सामने ला सकता है जो उनके पास पहले से ही हैं। इसलिए, जिस दिन से मैंने इसके बारे में सुना है, मैंने प्रार्थना करना बंद नहीं किया है कि आप सभी आध्यात्मिक ज्ञान में उसकी इच्छा के ज्ञान से भरे और उसके पात्र बनें। खैर, दुनिया में आध्यात्मिक ज्ञान क्या है? खैर, आध्यात्मिक एक विशेषण है और आध्यात्मिक का अर्थ है कि जानकारी के क्षेत्र में, आध्यात्मिक ज्ञान, आध्यात्मिक कौशल, उस परिवर्तित मन और इच्छा के अनुसार कार्य करने का कौशल।

अब, मैं इसे और भी अधिक विस्तार से बताना चाहूँगा, लेकिन हम इस अंश में जिस पर चर्चा कर रहे हैं, और आप न्यू टेस्टामेंट के बहुत से अंशों में उससे निपटेंगे, उसे हम धार्मिक भाषा कहते हैं। यह पूरी तरह रूपकात्मक है। रूपकों के कारण यह आपकी समझ से परे है।

इन चीज़ों का अर्थ समझने से पहले आपको रूपकों को समझना होगा। भरने के लिए विशेषता की ज़रूरत होती है। आध्यात्मिक ज्ञान को आध्यात्मिक सत्य के दायरे में आने वाली समझ से भी चिह्नित किया जाना चाहिए।

नए नियम में केवल चार बार ही ऐसे लोग हैं, जहाँ आध्यात्मिक शब्द का इस्तेमाल किसी व्यक्ति द्वारा किया गया है। हमें यह 1 कुरिन्थियों और गलातियों में मिलता है। मैं इस समय इनके बारे में विस्तार से नहीं बताऊँगा, लेकिन सच्चाई यह है कि जब आप उन जगहों को देखते हैं जहाँ लोगों को आध्यात्मिक के रूप में वर्णित किया गया है, तो आप ऐसे लोगों को देख रहे हैं जो ईश्वर के ज्ञान के आधार पर कुशल जीवन जीने की विशेषताओं का प्रदर्शन कर रहे हैं।

अब, इसे समझाना बहुत मुश्किल है क्योंकि अगर आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आप बाइबल को सतही तौर पर पढ़ने के आदी हैं और जब आप ऐसे अंशों पर आते हैं जिनमें रूपकों का इस्तेमाल किया जाता है और अगर आपको रूपक समझ में नहीं आता है, तो आप उसे एक अजीब दस्तावेज़ में बदल देंगे। और लोगों ने कहा है कि भरने का मतलब किसी चीज़ का ज़्यादा पाना है। नहीं, ऐसा नहीं है।

इसका मतलब है कि आपके पास जो पहले से है, उसके बारे में पहचान बनाना। अध्यात्मवाद का मतलब है, अच्छा, मुझे आध्यात्मिक होना है। अच्छा, आध्यात्मिक का मतलब है परमेश्वर के वचन से पहचान बनाना।

अगर आप उन चार अवसरों को देखें, तो उनमें से हर एक पवित्रता का अवसर है, जिसका मतलब है कि ईश्वर ने आपको जो सिखाया है, उसे जीना। तो, यह एक पेचीदा हिस्सा है। जानने या भरे जाने के लिए प्रोत्साहन।

वे किसी चीज़ को खोजने के लिए प्रोत्साहन नहीं हैं। वे आपके पास पहले से मौजूद जानकारी को शामिल करने और उस जानकारी के ज़रिए परमेश्वर के प्रति अपनी आज्ञाकारिता प्रदर्शित करने के लिए प्रोत्साहन हैं। अब, कुलुस्सियों में ऐसा करने के लिए एक बढ़िया जगह है।

अगर आप इन सभी ग्रंथों को पढ़ें और उनकी तुलना करें, तो आप देखेंगे कि यह कैसे होता है। बस यह याद रखें। यह कोई आसान काम नहीं है।

यह किसी चीज़ को जीना है और यह धार्मिक भाषा, रूपकों का उपयोग करके इस तथ्य को सामने लाना है कि आपको उस तरीके से ईश्वर की आज्ञा का पालन करने की आवश्यकता है। खैर, मैं इस समय बस इतना ही कह सकता हूँ। ईश्वर की इच्छा जानने के लिए नए नियम के पैटर्न भी एक खोज है।

यह एक प्रयास है। ईसाई होना कोई निष्क्रिय बात नहीं है। यह एक सक्रिय बात है।

मैं अपनी स्लाइड पर आता हूँ। ठीक है। हम ईश्वर की इच्छा का अनुसरण कैसे करते हैं? हम ईश्वर की इच्छा का अनुसरण इस प्रकार करते हैं कि हम यह जान सकें कि हमारे पास एजेंसी है।

हम ऐसा करने के एजेंट हैं और हम नैतिक इच्छा के अनुसार जीकर ऐसा करते हैं। खैर, मुझे लगता है कि हर कोई यह जानता है लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि हर कोई इसे पूरी तरह से अपनाता है। बाइबिल की शिक्षा के प्रत्यक्ष, निहित और निर्मित निर्माण स्तरों का प्रबंधन करके।

यह एक बड़ा काम है। बाइबल को समझना जब वह हमें सीधे तौर पर कुछ सिखाती है। इस बात पर सभी सहमत होंगे कि इसका मतलब यही है।

झूठ मत बोलो। लेकिन आप जानते हैं, इसका जवाब देना आसान नहीं है क्योंकि जब यहोशू ने उन शहरों को पीछे हटने के बारे में धोखा दिया, तो वह उन्हें धोखा दे रहा था। सभी झूठ में धोखे का तत्व होता है।

लेकिन धोखे का हर तत्व झूठ नहीं होता। इसलिए जब बाइबल कहती है, झूठ मत बोलो, तो आपको यह सवाल पूछना शुरू करना होगा कि इसका क्या मतलब है? यह इतना आसान नहीं है, है न? बाइबल को हमारे स्तर तक नीचा मत दिखाओ। यह एक ऐसा स्तर है जिस तक हमें पहुंचना है।

बाइबिल की शिक्षा के प्रत्यक्ष, निहित और निर्मित निर्माण स्तरों का प्रबंधन करना इस खोज का हिस्सा है। और मैंने अन्य व्याख्यानों में इसे समझाया है। एक गंभीर रूप से आत्म-जागरूक विश्वदृष्टि और मूल्य सेट विकसित करना।

याद है हमने इस बारे में बात की थी? मैं चाहता हूँ कि आप एक ऐसे व्यक्ति के रूप में विकसित हों जो अपने विश्वदृष्टिकोण और मूल्य प्रणाली को जानबूझकर अपनाता है और इसे अपने जीवन में लिए गए निर्णयों पर लागू करता है। इसके अलावा, ईश्वर के प्रति संवेदनशील होना।

आपको ईश्वरीय कृपा के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। ईश्वरीय कृपा ईश्वर की संप्रभुता का परिणाम है। नकारात्मक कृपा भी होती है।

आपकी कार दुर्घटनाग्रस्त हो गई। यह सकारात्मक भाग्य है। आपकी कार दुर्घटनाग्रस्त नहीं हुई।

ठीक है। तो प्रोविडेंस एक ऐसी चीज़ है जिसके बारे में थोड़ा सोचना पड़ता है। हम इसके बारे में बाद में थोड़ी बात करेंगे।

अय्यूब की तरह दिन के अंत में एक सर्वशक्तिमान ईश्वर पर भरोसा करना। भले ही वह मुझे मार डाले, फिर भी मैं उस पर भरोसा रखूँगा। यह आसान नहीं है।

मेरे जीवन की एक आयत, ऐसी बहुत सी आयतें हैं, लेकिन उनमें से एक यूहन्ना की है, जब यीशु के पास आए एक व्यक्ति ने कहा, प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ। मदद करें। मदद करें।

मेरा अविश्वास। मैं हर समय यही प्रार्थना करता हूँ। हे प्रभु, मैं समझ नहीं पाता।

मदद करो। प्रभु, मेरा मानना है कि आप न्यायप्रिय हैं। मेरा मानना है कि आप दुनिया को संचालित कर रहे हैं।

और फिर भी मैं कुछ चीजें देख रहा हूँ और मुझे परेशानी हो रही है। मदद करें। मेरा अविश्वास।

भगवान मेरे अविश्वास को कैसे दूर करते हैं? मुझे धर्मग्रंथों में ले चलो, जहाँ मैं ऐसे लोगों को देखता हूँ जो कष्ट सहते हैं, मरते हैं, और उनके साथ बुरा व्यवहार किया जाता है, और फिर भी वे भगवान पर भरोसा नहीं छोड़ते। यही बाइबिल की कहानी है। यही जीवन की कहानी है।

भगवान, एक नियम के रूप में, आपको अमीर बनाने, आपको खुश करने, आपको अपने जीवन से खुश करने के लिए जीवन में हस्तक्षेप नहीं करते हैं। हम सभी के पास एक जीवन है, और हमें इसे उसी संदर्भ में जीना है। और हम खुद को इससे मुक्त नहीं कर सकते।

लेकिन भगवान को दोष मत दीजिए। और यह दुनिया में होने की नकारात्मक नियति का एक हिस्सा है। और जब आप इसमें शामिल होते हैं और इस प्रक्रिया में उनकी आज्ञा का पालन करते हैं तो आप भगवान की महिमा करते हैं।

यह हम सभी के लिए सीखने के लिए एक बहुत बड़ा सबक है। अब, नए नियम में परमेश्वर की सभी भाषाओं का निष्कर्ष। जब मैं बाइबिल की शिक्षाओं का पालन करता हूँ, तो मैं परमेश्वर की इच्छा में रहता हूँ।

लोग इस बारे में बात करते हैं। आप जानते हैं, ईश्वर की इच्छा को जानें, ईश्वर की इच्छा के केंद्र में रहें। इसमें से बहुत सी बातें मूर्खता हैं।

बाइबिल जो सिखाती है, उसके केंद्र में रहो। यह ठीक है। जब मैं बाइबिल की शिक्षाओं का पालन करता हूँ, तो मैं परमेश्वर की इच्छा में रहता हूँ।

जैसे-जैसे मैं इस तरीके से जीना जारी रखता हूँ, मैं परमेश्वर की इच्छा, उसके वचन और बाइबिल के विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों के विकास द्वारा निर्देशित होता हूँ। परमेश्वर का मार्गदर्शन खोजो और पाओ मिशन पर आधारित नहीं है। परमेश्वर की इच्छा खोजो और पाओ मिशन पर आधारित नहीं है, बल्कि दिए गए शिक्षण मॉडल का पालन करने पर आधारित है।

यह बहुत बड़ी बात है। आप जानते हैं, विभिन्न अध्ययनों में यह साबित करने के लिए कोई जगह नहीं है कि आप आलसी लोगों के लिए स्वीकृत हैं। अगर आप आलसी हैं, तो यह आपकी गलती है।

अगर आप सीखने से इनकार करते हैं, तो यह आपकी गलती है। अगर आप किसी सवाल का जवाब देने के लिए हर संभव कोशिश नहीं करेंगे, तो याद रखें कि जिज्ञासा सीखने की कुंजी है। अगर आप इतनी उत्सुक नहीं हैं कि आप उसका पीछा करें, और आज की इस दुनिया में, तो आप बुरे हालात में पड़ सकते हैं।

आप शायद ऐसे देश में हों जहाँ आप खुलेआम भगवान की आराधना नहीं कर सकते। आप शायद ऐसी जगह पर हों जहाँ कोई लाइब्रेरी न हो। आप शायद ऐसी जगह पर भी हों जहाँ इंटरनेट न हो और आप इसे देखने के लिए किसी और जगह कंप्यूटर लैब में जा रहे हों।

हो सकता है कि आपके हालात बहुत बुरे हों, लेकिन फिर भी आपको अपनी चुनौतियों से निपटने के लिए ईश्वरीय तरीके से आगे बढ़ना होगा, जिसका मतलब है कि अपने सवालों का यथासंभव बेहतर तरीके से पीछा करना। और आज जब कंप्यूटर और इंटरनेट का विस्तार इस तरह से हो रहा है, तो ऐसा करने के कई तरीके हैं। अब आप इसे गलत तरीके से या बुरे तरीके से पीछा कर सकते हैं, इस बात से अनजान कि आप अपने सवाल का जवाब किससे ले रहे हैं, लेकिन आप इसे अच्छे तरीकों से पीछा कर सकते हैं।

मैं यहाँ एक छोटा सा विज्ञापन दूँगा। लगभग हर कोई Google का उपयोग करता है। जिसके पास कंप्यूटर है, वह Google का उपयोग करता है।

अगर आप बाइबल संबंधी शोध करना चाहते हैं, तो googlescholar.com का इस्तेमाल करें। इससे आपको जाँची-परखी जानकारी, लेख, किताबें और ऐसी चीज़ें मिलेंगी जो आपकी ज़्यादा मदद करेंगी। जबकि, आम तौर पर, Google ज़रूरी नहीं कि आपको ऐसी जानकारी दे। Google Scholar.

यह मुफ्त है। ठीक है। तो, यह कहावत बाइबल की शिक्षा का पालन करना है।

मैं ईश्वर की इच्छा में हूँ। इसलिए, आपको यह सवाल कभी नहीं पूछना चाहिए। क्या मैं ईश्वर की इच्छा में हूँ? आपको यह सवाल पूछना चाहिए कि क्या मैं ईश्वर के ज्ञान के अनुसार जी रहा हूँ जो मेरे पास है? धर्मग्रंथों और मेरे परिवर्तित मन के माध्यम से,

जहाँ मेरा विश्वदृष्टिकोण और मूल्य उन सभी चीज़ों पर लागू हो रहे हैं जिनसे मैं निपटता हूँ।

अब, मैं आपको बताना चाहता हूँ, यह आपको परेशान करेगा। यह आपको ऐसी स्थिति में डाल देगा कि आप कहेंगे, मुझे यह पसंद नहीं है। मैं इसके अनुसार जीना नहीं चाहता।

हम सब इस स्थिति से गुजर चुके हैं। लेकिन अगर आप भगवान को खुश करना चाहते हैं, तो आपको इससे निपटना होगा। ठीक है।

चलिए आगे बढ़ते हैं। नए नियम के संदर्भ में परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के उदाहरण। अब, हम फिर से उस बिंदु पर आ गए हैं जहाँ मैं आपको अंश दे रहा हूँ।

मैं आपसे यह अपेक्षा करने जा रहा हूँ कि आप इस पर काम करें, पाठ पढ़ें, इत्यादि। इस विशेष व्याख्यान में मेरा समय लगभग पूरा हो चुका है। और मेरे लिए यह आवश्यक है कि मैं अपनी समय सीमा के भीतर रहने का प्रयास करूँ।

लेकिन मैं आपको इतनी जानकारी दे रहा हूँ कि आप उसका पीछा कर सकते हैं। व्याख्यानों की शुरुआत में, आपको मेरा ईमेल मिलेगा। मेरी एक वेबसाइट है, www.gmetors.com, जहाँ आप मुझसे संवाद भी कर सकते हैं।

और आप देख सकते हैं कि मैं एक पागल आदमी हूँ। मैं बैजो बजाता हूँ और बाइबल पढ़ाता हूँ। इसलिए, बैजो और बाइबल मेरे जीवन का एक हिस्सा हैं।

ठीक है। नए नियम के संदर्भ में परमेश्वर की इच्छा पूरी करने का उदाहरण। परमेश्वर की इच्छा पूरी करने का यीशु का उदाहरण।

खैर, इब्रानियों का कहना है, मैं आया हूँ, मैं आपकी इच्छा पूरी करने आया हूँ, पिता। यीशु ने परमेश्वर की इच्छा पूरी की। यह एक ऐसी इच्छा थी जिसका परमेश्वर और यीशु शाश्वत परामर्श में हिस्सा थे, जिसे दुनिया के पापों से निपटने के लिए निर्धारित किया गया था।

वह आया। इब्रानियों 10, भजन 40. यह सब जगह है।

परमेश्वर की योजना के अनुसार जीवन जीना। यीशु ने पुराने नियम के वादों को पूरा किया। उसने अपने जीवन को परमेश्वर की योजना के अनुसार व्यवस्थित किया।

मनुष्य केवल रोटी से नहीं, बल्कि परमेश्वर के मुख से निकले हर शब्द, हर अक्षर और हर शब्द से जीवित रहेगा। उसने पुराने नियम की शिक्षा ग्रहण की। उसे उम्मीद थी कि लोग इसे जानेंगे, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया।

उन्होंने, ओह, मुझे माफ करें। क्षमा करें। उन्होंने जीवन को व्यवस्थित किया, मुझे माफ करें, सीधे निर्देशित किया, वे सीधे पुराने नियम की शिक्षाओं द्वारा निर्देशित थे।

मत्ती 4 और पहाड़ी उपदेश सामने आते हैं। उन्होंने प्रेरितों को इसे जारी रखने का निर्देश दिया। मत्ती 28 में, जाओ और सिखाओ, बपतिस्मा दो, और सबको सिखाओ।

उन्हें वे बातें बताओ, जो मैंने तुम्हें सिखाई हैं, उन्हें सिखाओ। और पौलुस तीमुथियुस के इस कार्य के बारे में बात करता है कि वह एक प्रचारक होने, सिखाने और उसका काम करने के लिए भी जिम्मेदार है। तो यह सब हमें हर जगह मिल गया है।

उसने प्रेरितों को ऐसा ही करने का निर्देश दिया। प्रेरित परमेश्वर की इच्छा का अनुसरण करने का एक उदाहरण हैं। पतरस और पौलुस ने केवल वही जारी रखा जो उन्होंने आधिकारिक शिक्षा से प्राप्त किया था।

उन पाठों को पढ़ें। वे हमें अपने स्वयं के उज्ज्वल विचार नहीं दे रहे थे। यहां तक कि जब पौलुस ने हमें कुछ ऐसा दिया जो कुरिन्थियों में पहले नहीं दिया गया था, तो उसने इसे बहुत स्पष्ट रूप से बताया।

यह मेरा अपना कोई बढ़िया विचार नहीं है। यह मुझे, एक प्रेरित को, परमेश्वर ने बताया था। वह ऐसा करने के लिए एक विशेष स्थान पर था।

परमेश्वर ने हमें यह नहीं बताया। उसने इसे प्रेरित को बताया, और प्रेरित ने इसे हमें अनुसरण करने के लिए दिया। यही क्रम है।

प्रामाणिक शिक्षा। वे सभी ग्रंथ भरे हुए हैं। काश मैं उन सभी को यहाँ आपके लिए खोल पाता।

हमें वहां पहुंचने के लिए 16 सप्ताह का कोर्स करना पड़ता है, जिसमें हर सप्ताह तीन घंटे का कोर्स करना होता है। वे उम्मीद करते हैं कि जिन्हें उन्होंने पढ़ाया है, वे भी वैसा ही करेंगे। जो मैंने तुम्हें सिखाया है, उसे तुम किसी और को सिखाओ।

यह सब शिक्षा के बारे में है। और यह आधुनिक दुनिया में चर्च की सबसे बड़ी विफलताओं में से एक है। इसके पास कोई अच्छा शैक्षिक कार्यक्रम नहीं है।

और मैं इसे ऐसे तरीकों से खोल सकता हूँ जिसके बारे में मैं बात भी नहीं करना चाहता। वे उम्मीद करते थे कि जिन्हें उन्होंने सिखाया है वे इसे दूसरों तक पहुँचाएँ। इस शिक्षा की विषय-वस्तु और इससे निकले मूल्य ईश्वर की इच्छा का गठन करते हैं।

जो लोग सुनते हैं और मानते हैं उनके लिए परमेश्वर की इच्छा। यहीं पर परमेश्वर की इच्छा पाई जाती है। यह उस परिवर्तित मन में पाई जाती है, जो लगातार अद्यतन होता रहता है।

यह एक कंप्यूटर की तरह है। आपको अपडेट करने के लिए हर बार एक और डिस्क डालनी पड़ती है। तो हम प्रूफ़ टेक्स्ट और प्रीटेक्स्ट के बीच कैसे अंतर करते हैं? याद रखें, प्रूफ़ टेक्स्ट तब होता है जब आप बाइबल में जाते हैं, और आपके पास एक आयत होती है जिसे आप लोगों को समझाते हैं, न कि एक आयत जो कुछ समझाती है।

लोग हमेशा ऐसा करते हैं। बाइबल हमें क्या सिखाती है, यह जानना। तीनों स्तरों पर इस बारे में बात की गई।

प्रत्यक्ष, लागू और रचनात्मक निर्माण। आपको हमेशा यह जानना होगा कि आप उस प्रतिमान में कहां हैं। मानक शिक्षण निर्धारित करने के लिए वर्णनात्मक बनाम निर्देशात्मक शिक्षण का समर्थन करें।

बाइबल हमारे लिए लिखी गई थी, लेकिन हमारे लिए नहीं। अगर आप चाहें तो गॉर्डन फी और स्टीवर्ट की बाइबल पढ़ने की किताब को ध्यान से पढ़ सकते हैं। इसके कई संस्करण हैं।

मैं सबसे ज़्यादा कारण जानने की कोशिश करूँगा। लेकिन बाइबल को पूरी तरह से पढ़ने से आपको निर्देशात्मक और वर्णनात्मक को समझने में मदद मिलेगी। वे आपको इसके ज़रिए समझाएँगे।

निर्देशात्मक वह पाठ है जो हमें किसी निश्चित समय और स्थान पर दिया जाता है, और वे बहुत हद तक उसी तक सीमित होते हैं, भले ही वे सैकड़ों वर्षों को कवर कर

सकते हैं। निर्देशात्मक शिक्षण कुछ ऐसा है जो हर समय और स्थान में हर किसी के लिए जिम्मेदार है; चाहे वह पुराने नियम में हो या नए नियम में, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यह निर्देशात्मक है।

हम अभी भी जिम्मेदार हैं। इसके अलावा, हम यह भी सीख रहे हैं कि टेक्स्ट के साथ ईमानदारी से कैसे पेश आना है। हम बहुत ईमानदार नहीं हैं।

यहां तक कि अविश्वासी कवि डेविड थोरो ने भी कहा था कि बिना जांचे-परखे जीवन जीने लायक नहीं है। मैं इसे फिर से कहना चाहता हूँ। बिना जांचे-परखे जीवन जीने लायक नहीं है।

क्या आप इस बात को लेकर सचेत हैं कि आप जीवन में कहाँ हैं और आप जीवन से कैसे निपटते हैं, खास तौर पर अपने ईसाई जीवन से? अगर आप इस मामले में खुद का आत्म-परीक्षण नहीं कर रहे हैं, तो आप आगे नहीं बढ़ रहे हैं। आपको पाठ के साथ ईमानदारी से पेश आना होगा। आपके पास सिखाने का इरादा होना चाहिए।

आपको धार्मिक विश्लेषण मिल गया है। मैंने आपको पहले ही बाइबल की शिक्षाओं के पिरामिड पर व्याख्यान दे दिया है। वापस जाकर उस पर विचार करें।

इसके अलावा, ऐसे मुद्दे जो मानदंड निर्धारित करते हैं। फिर से, हम थोड़ा आगे निकल जाएँगे, लेकिन हमें और भी बहुत कुछ मिल रहा है। नहीं, हम बेहतर कर रहे हैं।

हम यहाँ बहुत करीब पहुँच चुके हैं। मुद्दे जो मानदंड निर्धारित करते हैं। और मैं बस उनका उल्लेख करूँगा।

मैं आपको ऐसी सामग्री दे रहा हूँ जहाँ आप आदर्श का और अधिक अनुसरण कर सकते हैं। वर्णनात्मक और निर्देशात्मक। विश्लेषण, शिक्षण अभिप्राय, धार्मिक विश्लेषण।

मैंने आपको शुरुआती व्याख्यानों में जो चार्ट दिए थे, वे मैंने आपको बहुत जल्दी दे दिए थे, लेकिन आपको पीछे जाकर बाइबल के प्रस्तावों से थोड़ा आगे जाकर जीना होगा। हम सभी बाइबल से परे जाते हैं।

बाइबल में उन सभी बातों के लिए कोई सीधी शिक्षा नहीं है जिन्हें हम जानना चाहते हैं या जिन्हें जानने की आवश्यकता है। इसलिए, हमें विश्वदृष्टि और मूल्यों के पहलू

को देखना होगा क्योंकि वे स्वयं बाइबल को वहीं से आगे ले जा रहे हैं जहाँ यह रुकी हुई है और इसे उन निहितार्थों और संरचनाओं के माध्यम से आगे बढ़ा रहे हैं जो पवित्रशास्त्र हमें देता है। यह अपने आप में एक शिक्षा है।

मैंने वास्तव में इस पर एक किताब लिखी है, मूविंग बियॉन्ड द बाइबल टू थियोलॉजी। यह थोड़ा आगे की बात है, लेकिन यह आपको इसका स्वाद देती है, और आप इस दृष्टिकोण से इस पर शोध कर सकते हैं। बाइबल कैसे सिखाती है और हम पाठ से धर्मशास्त्र की ओर कैसे बढ़ते हैं? नैतिकता पाठ।

ये वो हैं जो मुझे पसंद आए। डेनिस हॉलिंगर से शुरुआत करना अच्छा रहेगा। इन्हें उल्टे क्रम में करें।

डेनिस हॉलिंगर, चॉइसिंग द गुड। नैतिकता पर एक बेहतरीन किताब जो हमारी चर्चा से मेल खाती है। रिचर्ड हेस, *द मोरल विजन ऑफ द न्यू टेस्टामेंट*।

हेस कभी-कभी पूरे नक्शे पर छाए रहते हैं, और हो सकता है कि आपने उनके बारे में हाल ही में कुछ बातें सुनी हों, और आप उनसे विमुख हो गए हों। खैर, उसे भूल जाइए। न्यू टेस्टामेंट के नैतिक दृष्टिकोण को इसके मूल संस्करण में पढ़ें, और आपको बहुत कुछ सीखने को मिलेगा।

चार्ल्स कॉसग्रोव के पास पाँच नियमों पर एक किताब है और यह आपके नोट्स में बाद की ग्रंथ सूची में है। यह बहुत, बहुत, बहुत मददगार है। ठीक है।

जेम्स थॉम्पसन। अभी-अभी मुझे यह मिला - पॉल के अनुसार नैतिक गठन।

मुझे यह किताब अभी-अभी इस्तेमाल की हुई किताब के रूप में मिली है और मैं इसे थोड़ा-बहुत पढ़ना चाहता हूँ। ठीक है। यह परमेश्वर की इच्छा का अनुसरण करने का अर्थ क्या है, इसका एक और उदाहरण है।

नया नियम मूल्य जमा प्रणाली को बढ़ावा देता है। अब, आप जानते हैं कि मूल्य जमा क्या है। हमने पुराने नियम में इसके बारे में बात की थी।

ये अंश इसी विचार को आगे बढ़ाते हैं। मुझे यहाँ आपको संभाल कर रखने की ज़रूरत नहीं है। बाइबल पढ़ें और इसे उन मूल्यों के साथ सहसंबंधित करें जिनके

बारे में मैंने निरंतर संचय के बारे में बात की थी जो एक जमा बन जाते हैं, जो हमारे जीने का तरीका बन जाते हैं, जिनके तर्क शास्त्रों से जुड़े होते हैं।

लेकिन वास्तव में, एक अर्थ में इससे परे जाएँ। इसके अलावा, आध्यात्मिक व्यक्ति कौन है? मुझे इसका उत्तर देना होगा क्योंकि हम अपने एक व्याख्यान में थोड़ी देर पहले इस आध्यात्मिक सुविधा की बात पर आए थे। सबसे पहले, नए नियम में केवल चार स्थान हैं जहाँ आध्यात्मिक शब्द, जो एक विशेषण है, एक संज्ञा बन जाता है और लोगों पर लागू होता है।

1 कुरिन्थियों 2:13, 1 कुरिन्थियों 3:1, 1 कुरिन्थियों 14:37, और गलातियों 6:1। इनमें से हर एक संदर्भ पवित्रीकरण और सीखने के बारे में है। आध्यात्मिक व्यक्ति कौन है? इन सभी ग्रंथों में से इसका उत्तर यह है कि आध्यात्मिक व्यक्ति वह व्यक्ति है जो परमेश्वर के वचन का पालन करता है। आपको इसे समझना होगा।

सबसे पहले, बेशक, एक आध्यात्मिक व्यक्ति वह है जो ईश्वर का अनुसरण करता है, उस विश्वदृष्टि और मूल्यों को सीखता है और लागू करता है जो जीवन के मुद्दों पर मन को बदल देता है। आध्यात्मिक होने का यही मतलब है। यदि आप ऐसा कर रहे हैं, तो आप आध्यात्मिक हैं।

आध्यात्मिकता किसी ऐसे स्तर पर नहीं है जिस पर हम या तो संयोग से या जानबूझकर पहुँचते हैं। लेकिन आध्यात्मिकता विकास है, प्रभु यीशु मसीह की कृपा और ज्ञान में बढ़ना। और उनके वचन में, ताकि हम बेहतर जीवन जी सकें और स्वर्ग के लिए खुद को तैयार कर सकें।

मुझे डर है कि जब आप मसीह के सामने खड़े होंगे, तो हम सभी अपने मन में चल रहे होंगे। अरे यार, सारी असफलताओं को देखो। वे मुझे घेर लेती हैं।

मेरी सारी असफलताएँ मुझे घेर लेती हैं। वह व्यक्ति जिससे मुझे बात करनी चाहिए थी। वह चीज़ जिसका मुझे अध्ययन करना चाहिए था।

मुझे जो सलाह देनी चाहिए थी। और बाद में मुझे पता चला कि मैं गलत था। यार, जब हम उस पंक्ति में खड़े होते हैं, जैसा कि यहाँ रूपक है, और यीशु हमारी आँख से आँख चाटने जा रहा है, तो हम उस प्रश्न का उत्तर देने जा रहे हैं।

आध्यात्मिक कौन है? और आध्यात्मिकता का मूल्यांकन परमेश्वर की शिक्षाओं के साथ हमारे संबंध और उनके प्रति हमारी आज्ञाकारिता से होता है। रोमियों 12:1, और 2 याद है? यह उतना साफ चार्ट नहीं है जितना मैंने पहले देखा था। डेटा विश्वदृष्टि में जाता है, और यह दूसरी तरफ अर्थ को बाहर निकालता है।

इसलिए अपने मन के प्रकटीकरण से रूपांतरित हो जाएँ ताकि आप पवित्रशास्त्र से परमेश्वर के विचारों का धन्यवाद कर सकें। क्योंकि जैसा व्यक्ति सोचता है, वैसा ही वह होता है। इसलिए, निष्कर्ष नए नियम और संपूर्ण बाइबल में परमेश्वर की इच्छा के अनुसार है।

जब मैं बाइबल की शिक्षाओं का पालन करता हूँ, और जब मैं पवित्रशास्त्र के अनुसार जीवन जीता हूँ, तो मैं परमेश्वर की इच्छा में हूँ। अगर मैं जानबूझकर उस शिक्षा को तोड़ता हूँ, तो मैं परमेश्वर की इच्छा में नहीं हूँ। लेकिन यह एक तरह से टुकड़ों में है, है न? यह अंदर और बाहर एक बहुत बड़ी अखंड चीज़ नहीं है।

लेकिन हमारे जीवन में अंदर और बाहर दोनों ही चीज़ें भरी पड़ी हैं। और हमारी परिपक्वता का पूरा उद्देश्य बाहर से ज़्यादा अंदर रहना है। नए स्वभाव के अनुसार जीना, आत्मा के फल की तरह विशेषताओं का वह नया समूह, न कि हमारी पुरानी प्रकृति के अनुसार जहाँ वासना और अवज्ञा का बोलबाला है।

जैसे-जैसे मैं इस तरीके से जीना जारी रखता हूँ, मैं अपने बाइबिल के विश्वदृष्टिकोण और मूल्य सेट के विकास द्वारा निर्देशित होता हूँ। ईश्वर का मार्गदर्शन खोज और पाने की प्रेरणा पर आधारित नहीं है, बल्कि दिए गए शिक्षा के अनुसरण पर आधारित है। बस इतना ही।

आपको परमेश्वर की इच्छा को खोजने की ज़रूरत नहीं है। यह खोई हुई नहीं है। आपको बस पवित्रशास्त्र को खोजने की ज़रूरत है।

आपको उस तरह का काम करने की ज़रूरत है जो उस पाठ से विश्वदृष्टि और मूल्यों का आधार बनाने के लिए ज़रूरी है। आप अभी ऐसे फैसले लेंगे जिनके लिए आप शुक्रगुज़ार होंगे। और अब से 10 साल बाद, आप कहेंगे, यार, ओह, यह बहुत बढ़िया है।

मैं बाइबल की वो सारी बातें मिस कर रहा हूँ जो मैंने तब से सीखी हैं। खैर, ऐसा ही होना चाहिए। आप बढ़ते हैं।

विकास का मतलब है प्रगति। और हमें अंग्रेजी भाषा में A से Z तक, ग्रीक भाषा में अल्फा से ओमेगा तक, या जो भी हो, प्रगति करनी है। आप प्रगति करते हैं।

और जैसे-जैसे आप आगे बढ़ते हैं, आप परमेश्वर की इच्छा को पूरा कर रहे हैं। उसने आपको ऐसा करने के लिए अपनी छवि में बनाया है। इसलिए, उसके अनुसार जिएँ।

इसमें शामिल हो जाइए। सीखने के प्रति उत्सुक रहिए। और परमेश्वर आपको आशीष देगा क्योंकि आप अपने मसीही जीवन में आगे बढ़ेंगे।

इसके लिए धन्यवाद। अब, अगले कई व्याख्यान व्यक्तिपरक चुनौतियों पर आधारित हैं। हम उनके साथ कुछ मज़ेदार करने जा रहे हैं क्योंकि मैं सभी प्रकार की रूढ़ियों पर प्रहार करने जा रहा हूँ।

विवेक, आत्मा, प्रार्थना और कुछ अन्य चीजों के बारे में। तो, ट्यून इन करें और अपनी सीटबेल्ट कस लें क्योंकि हम बाइबिल धर्मशास्त्र और भगवान हमें कैसे मार्गदर्शन करते हैं, इस बारे में सोचना जारी रखने जा रहे हैं।

धन्यवाद, और आपका दिन शुभ हो।